



श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

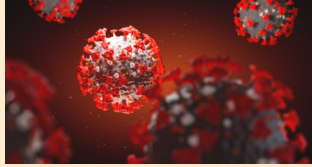
श्रुतदीप

विक्रम संवत् २०७७ • वर्ष : ४ • अंक : ३ • फरवरी २०२१

कोरोना से बचने के उपाय - जैन धर्म की दृष्टि से

- मुनिश्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर

सन २०२०, कोरोना वायरस ने पैदा किये भय की छाया में गुजर गया। अनुमान है कि २०२१ या उससे आगे भी इसका डर मंडराता रहेगा। कोरोना अतिसूक्ष्म विषाणु है, जो मनुष्य के शरीर में फैलकर कोविड-१९ नामक महामारि बन जाता है। जिस बीमारी से रोगी अदृश्य लक्षणों के साथ मौत के मुंह में चला जाता है। अथवा जिसके संक्रमण की रफ्तार तेज होती है, और बीमारी की रोकथाम के साधन हाथ में नहीं होते हैं, ऐसी बीमारी को महामारि कहा जाता है। कोरोना महामारी के निवारण के लिए अब तक कोई भी पुख्ता रोग-प्रतिबंधक दवा प्रामाणिक रूप से उपलब्ध नहीं हो पायी है। इस कारण भय खत्म नहीं हो रहा है।



चिकित्सा विज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य यह है कि, इस वायरस को फैलने से कैसे रोका जाये? इसके लिए विविध स्तर पर अनेक प्रयोग जारी हैं। इसी संदर्भ में नेचर नामक आंतरराष्ट्रीय संस्था ने अपने अभिमत प्रस्तुत किये हैं। उनकी पूर्वधारणानुसार प्रायः भोजन करते समय, बातचीत द्वारा अथवा खांसी-छींक आदि कारणों से मनुष्य के मुख की लार (saliva) के सूक्ष्म कण कोरोना वायरस के वाहक बनते हैं। कोरोना के विषाणु काफी सूक्ष्म होते हैं। वैज्ञानिकों ने इसका माप २७ नैनोमीटर जितना माना है। एक नैनोमीटर अर्थात् एक सेन्टीमीटर का एक हजारवां भाग होता है। जब एक कोरोना विषाणु को २७० गुना बड़ा किया जाये, तब वह एक मिलिमीटर कहा जायेगा। इतने सूक्ष्म कणों की गतिविधियों को जांचने-परखने के लिए विश्व के सबसे तेज और सटीक परम संगणक यंत्र (super computer) फगाकू (FAGAKU) का उपयोग किया गया।

उपरोक्त प्रयोग के लिए चार व्यक्तियों को बिना मास्क पहने एक टेबल पर बिठाया गया और उन्हें मात्र एक मिनट के लिए बातचीत करने के लिए कहा गया। सुपर कम्प्युटर के माध्यम से पता चला कि, मनुष्य के मुंह की लार (Saliva) के सूक्ष्म कण सबसे अधिक किस दिशा में फैलते हैं? उन सूक्ष्म कणों की इमेज सुपर कम्प्युटर की स्क्रीन पर झलकने लगी। पता चला कि, वे सूक्ष्म कण एक सीधी दिशा में ही गति प्राप्त कर रहे हैं। अर्थात् ठीक सामने बैठे व्यक्ति की दिशा में उन कणों का फैलाव होने लगा था। उनमें भी सबसे नजदीक बैठे व्यक्ति की तरफ जाने वाले कणों की संख्या, अगल-बगल में बैठे व्यक्ति की तरफ जाने वाले कणों की संख्या से पांच गुना अधिक थी। ४५ डिग्री तिरछे बैठे व्यक्ति की तरफ जाने वाले कणों की संख्या बेहद कम थी।

जैन शास्त्रों में (तत्त्वार्थसूत्र) कहा गया है कि- जीव और परमाणु की गति सीधी दिशा में होती है, विदिशा में नहीं होती।

जैन शास्त्रों में बताया हुआ पुद्गल की गति का यह नियम, उपरोक्त परीक्षणों से प्रत्यक्ष प्रमाणित होता है। इस नियम के अनुसार मनुष्य के मुंह से निकले पुद्गल



कोरोना विषाणुओं का वहन करते हैं। पुद्गलों के संग मिलकर वातावरण में फैलनेवाले इन विषाणुओं से बचने के उपाय भी हैं, जैसे कि-

१) जरूरत से अधिक नहीं बोलना, २) जहां कुछ लोग बोल रहे हैं, जरूरी न हो तो उस स्थान से स्वयं को दूर रखना, ३) जहां बोलना जरूरी है, वहां मुंह पर वस्त्र रखकर बोलना, ४) भोजन करते समय अथवा परस्पर चर्चा करते समय काफी नजदीकी नहीं रखना।

उपरोक्त चार उपाय प्राथमिक दृष्टि से विषाणुओं से बचाव में सहायक बन सकते हैं।

कोरोना की दूसरी और तीसरी लहर आने की संभावनाएं प्रबल बतायी जा रही है। ऐसे हालात में इस वायरस से बचने के लिए और अधिक प्रभावी उपायों पर ध्यान देना पडेगा। कोरोना का जब पहला दौर आया था, तब दुनिया उसके बारे में पूरी तरह से बेखबर थी। इस बीमारी के प्रभाव से लोग परिचित नहीं थे। मगर ओघनिर्युक्ति नामक जैन शास्त्र में ऐसी महामारि के बारे में और उससे बचाव के लिए अच्छा-खासा वर्णन प्राप्त है। इस विषय की जानकारी पर मुनिश्री त्रैलोक्यमंडनविजयजी म.सा. ने सुन्दर प्रकाश डाला है।



आज से लगभग २४०० वर्ष पूर्व श्री भद्रबाहुस्वामीजी द्वारा रचित ओघनिर्युक्ति नामक ग्रंथ में महामारि से कैसे बचा जा सकता है, इसका उल्लेख प्राप्त है। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एवं अन्य सूत्रों से कोरोना के बचाव के उपाय निर्दिष्ट हो रहे हैं। इन सबका विवरण ओघनिर्युक्ति में ग्रंथ प्रस्तुत है।

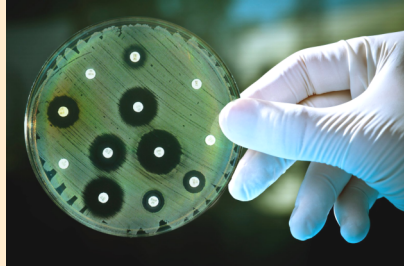
जैन धर्म में ऐसे अनेक बचावात्मक सावधानियों (Precautions) संबंधि नियम हैं, जिनके आधार से किसी भी घातक वायरसों से बचा जा सकता है। एक बात ध्यान में रखनी होगी कि, सभी वायरस रोग पैदा नहीं करते हैं। कुछ वायरस ऐसे भी हैं जो मनुष्य के शरीर को स्वस्थ भी रखते हैं। नुकसानदायी विषाणुओं से बचने के लिए मुख्य रूप से दो उपाय जरूरी हैं। पहला यह है कि, कोई भी वायरस किसी भी तरह से हमारे शरीर में प्रवेश न कर पाये और दूसरा उपाय है कि हमारे द्वारा वायरस दूसरों तक फैलने न पाये। कोरोना को लेकर दुनिया ने सबसे पहले इन्हीं दो उपायों पर ध्यान दिया। मास्क, सेनिटाइजेशन और सेल्फ-क्वारेन्टाइन के रूप में इन्हीं दो उपायों के साथ अब तक दुनिया इस विषाणु से बचने की मशकत करती आयी है।

प्रश्न यह है कि - क्या वायरस को फैलने से रोकने में और भी कुछ तरीके हो सकते हैं? इस सवाल के जवाब में जैनधर्म के कुछ नीति-नियामक तथ्यों में काफी महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध हैं। यहां उन्हीं संदर्भों का उल्लेख करना है। वायरस के फैलाव में सबसे बड़ा हिस्सा मनुष्य के शरीर से निकलने वाले उत्सर्जन का (Byproducts) है। पसीना, मल-मूत्र, नाक-कान-आंख से निकलता द्रव और मुंह की राल आदि तमाम पदार्थ वायरस के संवाहक बनते हैं। मुख्यतया अधिकांश वायरस

किसी पशु द्वारा मनुष्य के शरीर में इतनी तीव्रता से संक्रमण नहीं फैलाते हैं। जबकि, मनुष्यजनित वायरस किसी भी मनुष्य में काफी जल्दी से असर दिखाते हैं। मनुष्य के शरीर से उत्सर्जित पदार्थ और पानी ये दोनों घटक मिलकर संक्रमण फैलाने में बड़ी भूमिका रखते हैं।

जैन धर्म में उपरोक्त तथ्य व्यापक रूप से काफी पहले प्रतिपादित हो चुके हैं। जैन ग्रंथों में साफ-साफ कहा गया है कि, मनुष्य के शरीर द्वारा होनेवाले उत्सर्जनों से ४८ मिनट में लाखों की संख्या में सम्पूर्ण पंचेन्द्रिय मनुष्य पैदा हो जाते हैं। इस तथ्य को आज का विज्ञान भी स्पर्श कर रहा है। विज्ञान कहता है कि हमारा शरीर लाखों-करोड़ों जीवित कोषों से बनता है। मनुष्य के शरीर में तीस ट्रिलियन अर्थात् ३ अरब जीवित कोष हैं। इन प्रत्येक कोषों में एक दशमलव चार (१.४) वोल्टेज जितनी शक्ति व्याप्त है। शरीर में निरंतर नये कोषों का निर्माण होता रहता है। सात वर्ष के दरम्यान सभी कोष बदलकर दूसरे रूप में अस्तित्व प्राप्त कर लेते हैं। हवा, पानी, वातावरण, भोजन, श्वास, शब्द आदि द्वारा मनुष्य का शरीर जो शक्ति प्राप्त करता है, उस शक्ति द्वारा शरीर में नये कोष भी तैयार होते हैं। पुराने अथवा नये विषैले कोषों को शरीर उत्सर्जन द्वारा बाहर फेंक देता है। ध्यान देने वाली बात है कि, इन बाहर निकले कोषों में एक नियत समय (४८ मिनट तक) प्राणशक्ति का प्रभाव रहता है। उसके बाद उसका व्युत्सर्जन (Decomposing) होने लगता है। अगर व्युत्सर्जन होने से पहले उन प्राणयुक्त कोषों को दूसरे स्रोत मिल गये, तो वे विषैले कोष फिर सक्रिय हो जाते हैं और मनुष्य शरीर के जीवित कोष जैसा ही काम करने लग जाते हैं। द्रष्टव्य है कि, वायरस इसी तरह फैलकर अपनी शक्ति दिखाते हैं।

जैन दर्शन इस मुद्दे पर और अधिक मजबूत बात यह बताता है कि, इन असंख्य प्राणधारी कोषों का चेतना के साथ कोई संपर्क नहीं होता है, इस कारण इन कोषों में ज्ञानशक्ति नहीं होती है। इन्हें ब्रेन डेड सेल्स कहा जा सकता है। इन ब्रेन डेड सेल्स की



तमाम क्रियाएं मनुष्य के सेल्स (कोष) जैसी ही होती हैं। परन्तु इन्हें मनुष्य के मस्तिष्क से कोई आदेश नहीं मिलता। ऐसे कोष वायरस, बेक्टेरिया जैसे सूक्ष्म जीवों के संवाहक बनते हैं और किसी एक मनुष्य के शरीर से बाहर आकर अन्य व्यक्तियों से संपर्क कर लेते हैं। ये विषाणु नाक और मुँह के जरिये एक-दूसरे मनुष्य के शरीर में प्रवेश करते हैं। मनुष्य के शरीर का स्वभाव ही कुछ ऐसा होता है कि, अन्य मनुष्य के शरीर से उत्सर्जित विषाणु को अपने भीतर बड़ी शीघ्रता से ग्रहण कर लेता है।

मनुष्य शरीर के उत्सर्जन (मल-मूत्र आदि) वायरस के संवाहक बनते हैं। उत्सर्जनों से फैलते संक्रमण के बचाव में जैनधर्म के नियम काफी महत्वपूर्ण हैं। जैन परिभाषानुसार ४८ मिनट पश्चात् मनुष्य शरीर के मल-मूत्र आदि में सम्पूर्ण जीव उत्पन्न होते हैं और जब तक उत्सर्जित घटक सूख नहीं जाते, तब तक उनमें पुनरुत्पत्ति (Reproduction) की प्रक्रिया चलती रहती है। इस प्रक्रिया में पानी और भेज उनकी मदद करता है। पानीयुक्त उत्सर्जनों पर मच्छर जैसे जीव बैठकर वे भी संक्रमण बढ़ाते हैं।

उपरोक्त संक्रमणीय उत्पात को अटकाने अथवा उससे बचने के लिए पहला रास्ता यह है कि, मनुष्य शरीर के उत्सर्जनों को पानी के संपर्क से दूर रखना चाहिए अथवा वे घटक सूख कर डिस्कंपोज्ड हो जाये यह ध्यान रखना होगा। दूसरा उपाय है, संवाहकों से बचने की सावधानियां रखना।

उपरोक्त संदर्भ को ध्यान में रखकर जैनधर्म में अनेक नियमों का पालन होता है। कुछ तथ्य इस प्रकार हैं, -

१) पानी द्वारा संक्रमित होने वाले विषाणु अथवा बेक्टेरिया से बचने के लिए, पानी को कड़क उबालकर पीना चाहिए। पानी को उबालने से पहले, उसे मोटे-जाड़े कपड़े से छान (Filter) लेना चाहिए। उबालकर रखा पानी भी अगर लंबे समय तक पड़ा रहा हो तो वह पानी फिर उसी पूर्व अवस्था में जाता है, जिसमें पुनरुत्पत्ति की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसलिए गर्मियों में एक बार उबाला हुआ पानी १५ घंटे,

सर्दियों में १२ घंटे और बारिश में ९ घंटे तक ही उपयोगी होता है। इस तरह पानी में जीवकोषों की पुनरुत्पत्ति को रोका जा सकता है।



२) विषाणु का फैलाव मनुष्य के मुँह की राल से भी होता है। मनुष्य जब कुछ भी खाता है, तब उसकी राल खाद्यपदार्थ में घुलमिल जाती है। इस राल में पहले से बैठे वायरस, एक दूसरे का झूठा खाने से संक्रमण बढ़ाते हैं। इसलिए दूसरे का झूठा भोजन नहीं करना चाहिए।

३) जैन धर्म में भोजन करने के पश्चात् थाली धोकर पीने का नियम है। झूठी थाली के पानी में मुँह की राल के जीवित कोषों में वायरस की संख्या बढ़ने लगती है। झूठी थाली धोने के बाद भी पानी में जीवित संवाहक कोष सक्रिय रहते हैं, इसलिए थाली को भी सुखाना पड़ता है।

४) पानी पीने के बाद उस बर्तन को कपड़े से पोछकर सूखा कर लेना चाहिए। पानी और राल का मिश्रण बर्तन पर चिपका रहने के कारण उसी झूठे बर्तन से पानी नहीं पीना चाहिये।

५) पकाया हुआ भोजन अधिक समय तक नहीं रखना चाहिए। बासी-भोजन में पानी का अंश होता है, जो जैविक उत्पत्ति प्रक्रिया को रफ्तार से बढ़ाता है।

६) फ्रिज में रखे खाद्यपदार्थ वायरस के संवाहक बनते हैं। भोजन प्राकृतिक स्वच्छ वातावरण में ढँककर रखना चाहिए।

७) शरीर के किसी भी उत्सर्जन को पानी के संपर्क से दूर रखना चाहिए। उत्सर्जित घटक सूख जाये, ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये।

८) आर्द्रता (Humidity) भरे वातावरण में वायरस फैलने की संभावनाएं अधिक रहती हैं। वैज्ञानिकों ने इस बारे में काफी प्रयोग-परीक्षण किये हैं। बंदिस्त जगहों पर जहां आर्द्रता अधिक होती है, वहां मनुष्य के मुँह की लार के फैलाव का अध्ययन करते हुए पाया गया कि, ऐसे बंदिस्त स्थानों में, जहां हवा की आवाजाही नहीं होती है, वहां आर्द्रता बढ़ जाती है। जहां आर्द्रता का प्रमाण ३० प्रतिशत था, वहां कोई व्यक्ति मास्क पहने बगैर खांसने लगा, तब वहां विषाणुओं की मात्रा काफी अधिक नजर आयी। जहां आर्द्रता साठ प्रतिशत थी, वहां दूगनें विषाणुओं की संख्या पायी गई। ट्रेन, बस और कारों भीड़ भरी जगहों के परीक्षण से भी पता चला कि, वहां फेसशिल्ड अथवा मास्क के बचाव कमजोर सिद्ध हुए। कारण फेसशिल्ड सूक्ष्मकणों को फैलने से रोकने के बजाय विषाणुओं की सिर्फ दिशा बदल देते हैं। इसलिए परस्पर आमने-सामने बैठने के बजाय दूर अगल-बगल बैठने से विषाणुओं से सुरक्षित रखा जा सकता है।

जैन शास्त्रों में बताये उपरोक्त नियमों का पालन करने से एक तरफ जीवों की हिंसा के पाप से बचा जा सकता है, और दूसरी तरफ बीमारी से भी बचा जा सकता है। इस तरह शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टि से ये नियम लाभदायी होते हैं।

प्रस्तुत लेख का परीक्षण करने के साथ इस से जुड़े शास्त्रीय और वैज्ञानिक संकेत सूचित करने के लिए पूज्य आचार्यदेव श्री दिव्यकीर्तिसूरिजी म.सा. (आ.श्रीरामचंद्रसूरि समुदाय) परम पूज्य आचार्यदेव श्री यशोविजयसूरिजी महाराज (आ.श्री प्रेम-भुवनभानुसूरि समुदाय) तथा डॉ.जितेंद्र बी. शाह का ऋणी हूँ।

(मूल गुजराती लेख का हिंदी अनुवाद - ओमजी ओसवाल)

संदर्भ - fb.com.science nature page/E223

अनेकांत व्याख्यानमाला

हर महिने के अंतिम शनिवार को रात ८.०० बजे 'अनेकांत : वर्तमान संदर्भ में' इस विषय पर विविध विद्वानों के व्याख्यान हो रहे हैं।

जिज्ञासुओं को विशेष माहिती ७७४४००५७२८ इस WhatsApp नंबर से मिल सकती है।

मौन एकादशी

- मुनिश्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर

मौन एकादशी की साधना तीन स्तर पर होती है,

१) नाम की साधना २) नमन की साधना ३) मौन की साधना।

कलिकालसर्वज्ञ आचार्यदेव श्री हेमचन्द्राचार्यजी महाराजा सकलार्हत् स्तोत्र में कहते हैं- परमात्मा विश्व को चार माध्यमों द्वारा पवित्र करते हैं-

१) अपने नाम के माध्यम से २) मूर्ति के माध्यम से

३) भिन्न-भिन्न अवस्था द्वारा ४) भाव द्वारा।

भगवान की उपकारिता में क्षेत्र और काल आडे नहीं आते हैं। द्रव्य और भाव रूप में भगवान का अनुग्रह आत्मसात् करने जैसा भाग्य हमारे पास नहीं है। भगवान का नाम और आकृति रूप हमारी नजरों के सम्मुख निश्चित है। मगर आकृति के भी कुछ बंधन हैं। नाम की साधना व्यापक रूप से सहज संभव है।

मौन एकादशी का दिन भगवान के नाम को याद करने का पवित्र दिवस है। देह सौ कल्याणकों से यह तिथि पावन बनी है। दश क्षेत्र एवं भूत-भविष्य और वर्तमानकाल के तीर्थंकर भगवतों के पांच-पांच कल्याणक आज संपन्न हुए हैं। उन प्रत्येक भगवान के नाम स्मरण करने से भगवान की समीपता का अनुभव होता है।

भगवान का सामीप्य उनको करुणा का स्पर्श करवाता है। भगवान की करुणा के स्पर्श से प्रसन्नता का अनुभव होता है। भगवान के उपकार याद आते हैं, फलस्वरूप भगवान के चरणों में हमारे भीतर नमन के भाव जन्म लेते हैं।

नमन, मौन एकादशी की साधना का दूसरा महत्वपूर्ण प्रकार है। नमन अर्थात् भगवान के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति। मौन एकादशी भगवान की स्तुति, देववंदन, स्तवन आदि के द्वारा भगवान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के अवसर का पर्व है।



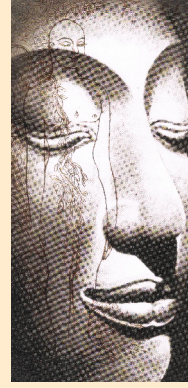
भगवान के उपकारों को याद करने की तिथि को मौन एकादशी कहा जाता है। सामान्य अर्थ से हमने यह मान लिया है कि, आज के दिन मुंह पर ताला लगाना है। 'नहीं बोलने' के अर्थ में मौन शब्द है, यह हमारी अधूरी समझ है। संस्कृत भाषा में यह शब्द मुनि शब्द से उभरकर आया है। मुनि का स्वभाव होता है कि किसी भी घटना की प्रतिक्रिया (Reaction) नहीं देना। हमारे मन में हजारों विचार जन्म लेते

रहते हैं। विचार बूरे अथवा अच्छे नहीं होते हैं। मूलतः विचार तो मात्र विचार रूप में होते हैं, हम उन विचारों को अपने लगाव से जोड़कर अच्छे-बुरा बना देते हैं। हमारे मन के झुकाव से जुड़कर विचार अच्छे-बुरे रूप ले लेता है। लगाव का जुड़ाव प्रतिभाव अर्थात् प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। मुनि विचार को लगाव से अलग रखते हैं, असंपृक्त रखते हैं। मुनि का स्वभाव हमेशा मन को नोनरिएक्टिव मोड में ले जाने का रहता है। मन को प्रतिक्रियाएं देने की आदत से मुक्त रहने का नाम मौन है। मन को प्रतिक्रियाओं से दूर रखना आसान नहीं है, इसके लिए दो उपाय हैं-

१) मन को किसी तटस्थ (Neutral) विषय से जोड़ देना।

२) विचारों को आने दिया जाये उन में अपने लगाव से अलग रखना।

उपरोक्त उपाय ध्यान से सफल बनेंगे। कुछ समय मन को भगवान के साथ, गुरु के साथ अथवा अच्छे विचारों से जोड़ने से उतने समय मन प्रतिक्रिया देना बंद कर देगा। मंत्र का जाप करने से, पूजा-भक्ति और सेवाकार्यों से जुड़ने के समय भी मन की प्रतिक्रिया मौन हो जायेगी।



विचार की दृष्टि से मन की प्रतिक्रिया का अटकाव करने का उपाय यह है कि, किसी शांत स्थान पर बैठकर शांतिपूर्वक विचारों का निरीक्षण करें। मन में जो विचार आ रहे हैं, उन्हें चिह्नित करें और उसके साथ जुड़े लगाव को भी समझने का प्रयास करें। विचार और लगाव को परस्पर अलग (Separate) रखने का यह अभ्यास मौन को सुदृढ़ बनायेगा। मन की प्रतिक्रिया के अभाव में ही विशुद्ध मौन का अनुभव होगा। मौन आत्मशांति का प्रवेशद्वार है। मौन एकादशी तीन संदेश देती है-

१) भगवान का नाम स्मरण करते रहो, फल स्वरूप नमन का भाव जन्म लेगा।

२) भगवान को नमन करते रहो, फलस्वरूप न-मन (No Mind) का भाव जन्म लेगा।

३) मन अनावश्यक विचारों से मुक्त होगा, फलस्वरूप शांति का अनुभव होने लगेगा। आचारांग सूत्र में एक सुन्दर बात कही गयी है-

जे मोणं ति पासहा तं सम्मति पासहा ।

जो व्यक्ति मुनि की नजर से देखेगा, वही सही देख पायेगा।

नाम, नमन और मौन के सहारे सबके जीवन में शांति की व्याप्ति हो, यही शुभकामना।

(मूल गुजराती लेख का हिंदी अनुवाद - ओमजी ओसवाल)



पदार्पण

श्रुतभवन में पू. आ. श्री जगच्चंद्रसू. म.सा., पू. आ. श्री चंद्रभूषणसू. म.सा., सा. श्री उद्योतदर्शनाश्रीजी म.सा., श्री ललित गांधी (राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्याक महासंघ), श्री संकेतजी मुनोत (अध्यक्ष, Understanding Jainism Group), श्री सुरेशजी जैन का पदार्पण हुआ।

समाचार

दि. १९-११-२०२० के दिन पूज्य गुरुदेव की निश्रा में ज्ञानपंचमी देववंदन, ब्राह्मी पूजन का कार्यक्रम भक्तिमय वातावरण में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

दि. ३०-११-२०२० के दिन कार्तिक पूनम का कार्यक्रम भक्तिमय वातावरण में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

दि. २५-१२-२०२० के दिन पूज्य गुरुदेव की निश्रा में मौन एकादशी देववंदन भक्तिमय वातावरण में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

दि. ८-०१-२०२१ के दिन पौष दशमी, पार्श्वनाथ प्रभु जन्मकल्याणक निमित्त विशिष्ट अभिषेक संपन्न हुआ।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प अंतर्गत लोकप्रकाश, पृथ्वीचंद्रचरित्र, अरिष्टनेमिजिनचरित्र, प्रवचनविचारसार, ऋजुप्राज्ञव्याकरण, नवतत्त्वप्रकरण सह टीका एवं नाममाला सह टीका का संपादन कार्य प्रवर्तमान है।

पू. सा. श्री मधुरहंसाश्रीजी म. प्रदेशी राजा चरित्र का लिप्यंतर कर रही है। पू. सा. श्री धन्यहंसाश्रीजी म. पर्युषणचिंतामणि प्रकरण सह टबार्थ का लिप्यंतर कर रही है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प अंतर्गत पू. आ. श्री मुनिचंद्रसू. म.सा., पू. आ. श्री हेमप्रभसू. म.सा., पू. आ. श्री हर्षवर्धनसू. म.सा., पू. आ. श्री अभयदेवसू. म.सा., पू. आ. श्री महाबोधिसू. म.सा., पू. मु. श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा., पू. मु. श्री मुक्तिश्रमणवि. म.सा., पू. मु. श्री रैवतभूषणवि. म.सा., पू. मु. श्री श्रुततिलकवि. म.सा., पू. मु. श्री प्रशांतवल्लभवि. म.सा., पू. ग. श्री सुयशचंद्रवि. म.सा., पू. मु. श्री उदयरत्नवि. म.सा., पू. सा. श्री हर्षितगुणाश्रीजी म.सा., पू. सा. श्री कुमुदरेखाश्रीजी म.सा., पू. सा. श्री संबोधि म.सा., श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा तथा श्री केवल मेहता को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

- श्री नलिनकांत जेवतजी दलाल, पुणे
- श्री अभूषा फाउंडेशन, चेन्नई
- श्री सुधीरभाई सुंदरलाल कापडीया, मुंबई
- सौ कल्पनाबेन सुधीरभाई कापडीया, मुंबई
- प.पू. आचार्य श्री विजय यशोवर्मसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से श्री हरहरवाला बिल्डिंग श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, मुंबई
- श्री वासुपूज्यस्वामी श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, मुराद सोसायटी, पुणे
- सौ सोनालीबेन भुपेंद्रकुमार जैन, दापोली
- सौ भारतीबेन मोतीलाल जैन, सातारा
- सौ रेखाबेन अशोकभाई कोठारी, मुंबई
- श्री विलासकुमारजी पुनमचंद्रजी नानेशा, सातारा
- स्थानकवासी छ कोटी लिंबडी अजरामर संप्रदाय, मुंबई

- श्री अशोकभाई अचलचंद्रजी हिगड (जैन), पुणे
- Tiam Cosmetics, Mumbai
- श्री हसमुखभाई शाह, मुंबई
- श्री वैभव प्रकाशजी धोका, पुणे
- सौ अदितिबेन सागरभाई शाह, पुणे
- श्री मूळराजजी व्ही. संघवी, मुंबई
- श्री विलास शांतिलालजी भंडारी, पुणे
- सौ कविताबेन रितेशभाई कोठारी, पुणे
- श्री सिद्धार्थ रतिलाल शाह, पुणे
- श्री अश्विनभाई अमृतलाल संघवी, पुणे
- श्री निरवभाई प्रतापभाई शाह, मुंबई
- हितेश स्टील कापेरेशन (दीपकभाई), मुंबई

प्रतिभाव

पूज्य गुरुदेव का प्रगल्भ ज्ञान एवं उनका अभ्यास, जैन धर्म के दीर्घकालीन संरक्षण हेतु उनके विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं अनुकरणीय है। पूरे ट्रस्ट मंडल का कार्य वंदनीय है। इस कार्य के प्रचार-प्रसार एवं विस्तार हेतु मुझे योगदान देने का अवसर मिले तो वह मेरा सौभाग्य होगा।

- श्री ललितजी गांधी (राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्याक महासंघ)

सुवाक्य

भवदुस्ख्रतावियाणं रागाईविविहरोगदुहियाणं।
जीवाण निव्वुड्ढकरं जिणवयणं जयउअमियमयं॥

- उत्तराध्ययननिर्युक्ति प्रत, (विजयगच्छ भंडार, राधनपुर)

अमृत समान जिनवचन जीवों के संसारताप को शांत करता है,
राग आदि विविध रोगों का दुःख दूर करता है। उसकी जय हो।

Printed Matter

Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)

47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational
speeches about Shrut
please subscribe our Shrutbhavan
YouTube channel